शंका -- प्रकृतिके बहुवचनको क्यों अलग किया गया है?

समाधान -- चूँकि उसमें ज्ञानावरण स्वरूपको छोड़कर और कोई दूसरा स्वरूप नहीं पाया जाता है, अतः उसके बहुवचनको अलग किया गया है। आवरणीय (आवरणके योग्य) का भेद होनेपर ही आवरण प्रकृतिका भेद होता है। परन्तु आवरण करनेके योग्य केवलज्ञानका कोई भेद है ही नहीं, जिससे कि प्रकृतिका भेद हो सके। इस कारण प्रकृतिका अभेद (एकता) सिद्ध ही है।

जीवोंका बहुत्व सम्भव है। यदि कहा जाय कि जीवोंके बहुत्वसे प्रकृतिका बहुत्व भी सम्भव है, तो यह यह भी ठीक नहीं है, क्योंकि, प्रकृतिमें एकस्वरूपता देखी जाती है। इस कारण बध्यमान कर्मस्कन्धके सम्बन्धमें जीव, प्रकृति और समय; इनके एकवचन और जीवोंके बहुवचनकी सम्भावना है, यह सिद्ध है।

एत्थ अक्खपरावत्ते कदे बज्झमाणियाए वेयणाए जीव-पयडि-समयपत्थारो उप्पज्जदि। तस्स संदिट्ठी एसा

१ २
१ १
१ १

।एवं ठविय पुणो एदस्स पढमसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा सिया बज्झमाणिया वेयणा। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा सिया बज्झमाणिया वेयणा (* ता प्रतौ 'वेयणा (ए)' इति पाठः।)। एवं बे भंगा (२)। जीवबहुत्तेण पयडिबहुत्तं णत्थि, किंतु कालबहुत्तेण चेव पयडिबहुत्तं होदि। तत्थ वि उवसंताए उदय-ओकड्डुण-उक्कड्डुण-परपयडिसंकमणादीहि पयडिभेदो णत्थि, किंतु बज्झमाणसमयबहुत्तेण चेव पयडिभेदो, तहा (* म प्रति पाठोऽयम्। अ आ का प्रतिषु 'तदा', ता प्रतौ 'तदा (था)' इति पाठः।) लोए संववहारदंसणादो। एवं बज्झमाणियाए वेयणाए बे चेव भंगा पढमसुत्तम्मि।

यहाँ अक्षपरावर्तन करनेपर बध्यमान वेदना सम्बन्धी जीव, प्रकृति व समयका प्रस्तार

उत्पन्न होता है। उसकी सन्दृष्टि यह है -

जीव	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक
समय	एक	एक

।

इस प्रकार स्थापित करके इस प्रथम सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् बध्यमान वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् बध्यमान वेदना है। इस प्रकार दो भंग हुए (२)। जीवोंके बहुत्वसे प्रकृतिका बहुत्व नहीं होता, किन्तु कालके बहुत्वसे ही प्रकृतिका बहुत्व होता है। कालबहुत्वमें भी उपशान्तमें उदय, अपकर्षण, उत्कर्षण और परप्रकृतिसंक्रमण आदिके द्वारा प्रकृतिभेद नहीं होता, किन्तु बध्यमान समयोंके बहुत्वसे ही प्रकृतिभेद होता है, क्योंकि, लोकमें वैसा संव्यवहार देखा जाता है। इस प्रकार प्रथम सूत्रमें बध्यमान वेदनाके दो ही भंग हैं।

सिया उदिण्णा वेयणा।।३१।।

कथंचित् उदीर्ण वेदना है।।३१।।

संपहि एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे जीव-पयडि-समयाणमेगवयणं जीव-समयाणं बहुवयणं च ठविय

१ १ १
२ ० २

एत्थ अक्खपरावत्ते कदे उदिण्णवेयणाए जीव-पयडि-समयाणं पत्थारो उप्पज्जदि

१ १ २ २
१ १ १ १
१ २ १ २

। एत्थ उदिण्णाए णत्थि पयडिबहुवयणं, एक्किस्से णाणावरणपयडीए बहुत्ताभावादो। जीवबहुवयणमत्थि। ण तत्तो उदिण्णबहुत्तं, समयबहुत्तादो चेव उदिण्णाए बहुत्तववहारुवलंभादो। ण च लोगववहारबाहिरं किं पि अत्थि, अव्ववहारणिज्जस्स अत्थित्तविरोहादो। संपहि एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उदिण्णा वेयणा। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उदिण्णा वेयणा। एवमुदिण्णएगवयणसुत्तस्स बे भंगा (२)।

अब इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय जीव, प्रकृति और समय, इनके एकवचन

तथा जीव व समयके बहुवचनको

जीव	प्रकृति	समय
एक	एक	एक
अनेक	०	अनेक

भी स्थापित करके

यहाँ अक्षपरावर्तन करनेपर उदीर्ण वेदना सम्बन्धी जीव, प्रकृति व समयका प्रस्तार उत्पन्न होता है --

जीव	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक
समय	एक	अनेक	एक	अनेक

यहाँ उदीर्ण वेदनामें प्रकृतिका बहुवचन सम्भव नहीं है, क्योंकि, एक ज्ञानावरणीय प्रकृतिका बहुत होना असम्भव है। जीवबहुवचन सम्भव है। परन्तु उससे उदीर्ण प्रकृतिका बहुत्व सम्भव नहीं है, क्योंकि, समयबहुत्वसे ही उदीर्ण प्रकृतिके बहुत्वका व्यवहार पाया जाता है। और लोकव्यवहारके बाहर कुछ भी नहीं है, क्योंकि, अव्यवहरणीय पदार्थके अस्तित्वका विरोध है। अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् उदीर्ण वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् उदीर्ण वेदना है। इस प्रकार उदीर्ण वेदना सम्बन्धी एकवचन सूत्रके दो भंग होते हैं (२)।

सिया उवसंता वेयणा ।।३२।।

कथंचित् उपशान्त वेदना है।।३२।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थपरूवणाए कीरमाणाए जीव-पयडि-समयाणमेगवयणं जीवसमयाणं

बहुवयणं च ठविय

१	१	१
२	०	२

अक्खपरावत्ते कदे उवसंतवेयणाए जीव-पयडि-समयपत्थारो

होदि

१	१	२	२
१	१	१	१
१	२	१	२

। संपहि एदस्स सुत्तस्स भंगुच्चारणं कस्सामो। तं जहा -

एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उवसंता वेयणा। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उवसंता वेयणा। एवमेदस्स सुत्तस्स वि बे चेव भंगा (२)। एवं बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंताणमेगवयणपरूवणा कदा।

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय जीव, प्रकृति व समय, इनके एकवचन तथा

जीव व समयके बहुवचनको

जीव	प्रकृति	समय
एक	एक	एक
अनेक	०	अनेक

स्थापित कर

अक्षपरावर्तन करनेपर उपशान्त वेदनासम्बन्धी जीव, प्रकृति व समयका प्रस्तार होता है

जीव	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक
समय	एक	अनेक	एक	अनेक

।

अब इस सूत्रके भंगोंका उच्चारण करते हैं। यथा -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् उपशान्त वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् उपशान्त वेदना है। इस प्रकार इस सूत्रके भी दो ही भंग हैं (२)। इस प्रकार बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनाके एकवचनकी प्ररूपणा की गयी है।

सिया उदिण्णाओ वेयणाओ।।३३।।

कथंचित् उदीर्ण वेदनाएँ हैं।।३३।।

बज्झमाणियाए वेयणाए किण्ण बहुत्तं परूविदं? ण, ववहारणयम्मि तिस्से बहुत्ताभावादो। ण ताव जीवबहुत्तेण बज्झमाणियाए बहुत्तं, जीवभेदेण तिस्से भेदववहाराणुवलंभादो। ण पयडिभेदेण भेदो, एक्किस्से णाणावरणीयपयडीए भेदववहारादंसणादो। ण समयभेदेण भेदो, बज्झमाणियाए वट्टमाणविसयो कालबहुत्ताभावादो। तम्हा बज्झमाणियाए वेयणाए णत्थि बहुवयणमिदि घेत्तव्वं।

शंका -- बध्यमान वेदनाके बहुत्वकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गयी है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, व्यवहार नयकी अपेक्षा उसके बहुत्वकी सम्भावना नहीं है। कारण कि, जीवोंके बहुत्वसे तो बध्यमान वेदनाके बहुत्वकी सम्भावना है नहीं, क्योंकि, जीवोंके भेदसे उसके भेदका व्यवहार नहीं पाया है। प्रकृतिभेदसे भी उसका भेद सम्भव नहीं है, क्योंकि, एक ज्ञानावरणीय प्रकृतिके भेदका व्यवहार देखा नहीं जाता। समयभेदसे भी उसका भेद नहीं हो सकता, क्योंकि, वर्तमान कालको विषय करनेवाली बध्यमान वेदनामें कालके बहुत्वकी सम्भावना नहीं है। इस कारण बध्यमान वेदनाके बहुवचन नहीं है, ऐसा ग्रहण करना चाहिए।

संपहि उदिण्णाए वि ण जीवबहुत्तेण बहुत्तं, तहाविहववहाराभावादो। ण पयडिबहुत्तेण उदिण्णवेयणाए बहुत्तं, णिरुद्धेयपयडित्तादो। कालबहुत्तं चेव अस्सिदूण बहुवयणसुत्तभंगपरूवणा कीरदे। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा सिया उदिण्णाओ वेयणाओ। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा सिया उदिण्णाओ वेयणाओ। एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

जीवबहुत्वसे उदीर्ण वेदनाका भी बहुत्व सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा व्यवहार नहीं पाया जाता। प्रकृतिबहुत्वसे भी उदीर्ण वेदनाका बहुत्व असम्भव है, क्योंकि, एक ही प्रकृतिकी विवक्षा है। अतएव एक मात्र कालबहुत्वका आश्रय करके बहुवचनसूत्रके भंगोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी कथंचित् उदीर्ण वेदनाएँ हैं। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी कथंचित् उदीर्ण वेदनाएँ हैं। इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भंग हुए (२)।

सिया उवसंताओ वेयणाओ।।३४।।

कथंचित् उपशान्त वेदनाएँ हैं।।३४।।

एदस्स सुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा सिया उवसंताओ वेयणाओ। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा सिया उवसंताओ। एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा(२)। संपहि दुसंजोगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

इस सूत्रके भंगोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें अनेक समयोंमें बाँधी गयी कथंचित् उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा अनेक जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी कथंचित् उपशान्त

वेदनाएं हैं। इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भंग हैं (२)। अब दोके संयोगी प्ररूपणाके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च ।।३५।।

कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदना है।।३५।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे ताव बज्झमाण-उदिण्णाणं

१	१
०	२

दुसंजोगसुत्तपत्थारं

१	१
१	२

तेसिं जीव-पयडि-समयपत्थारे चदुविय

१२	१	१	२	२
११	१	१	१	१
१२	१	२	१	१

पच्छा एदस्स सुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च वेयणा (* ता प्रतौ 'च वेयणा (ए)'इति पाठः।) एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च वेयणा। एवमेदस्स दुसंजोगपढमसुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

इस सूत्रके अर्थका कथन करते समय पहले बध्यमान और उदीर्ण दोनोंके संयोगरूप सूत्रके प्रस्तारको

ब०	उ०
एक	एक
एक	अनेक

तथा अनेक जीव, प्रकृति व समय सम्बन्धी प्रस्तारको भी स्थापित करके

	बध्यमान		उदीर्ण			
जीव	एक	अनेक	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	अनेक	एक	अनेक

पश्चात् इस सूत्रके भंगोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण; कथंचित्

बध्यमान और उदीर्ण वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण; कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदना है। इस प्रकार दोके संयोगरूप इस सूत्रके दो ही भंग हैं (२)।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च ।।३६।।

कथंचित् बध्यमान (एक) और उदीर्ण अनेक वेदनाएँ हैं।।३६।।

एदस्स दुसंजोगबिदियसुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च वेयणाओ। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णाओ; सिया बज्झमाणिया च (* अ आ का प्रतिषु 'बज्झमाणियाओ', ता प्रतौ 'बज्झमाणिया (ओ)' इति पाठः।) उदिण्णाओ च वेयणाओ (२)। एवं दुसंजोगबिदियसुत्तस्स दो चेव भंगा।

दोके संयोगरूप इस द्वितीय सूत्रके भंगप्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है-- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उदीर्ण; कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदनाएँ हैं। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उदीर्ण, कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदनाएँ हैं। इस प्रकार दोके संयोगरूप द्वितीय सूत्रके दो ही भंग हैं (२)।

सिया बज्झाणिया च उवसंता च।।३७।।

कथंचित् बध्यमान (एक) और उपशान्त (एक) वेदना है।।३७।।

एदस्स बज्झमाण-उवसंताणं दुसंजोगपढमसुत्तस्सत्थे भण्णमाणे ताव बज्झमाणाणं उवसंताणं दुसंजोगसुत्तपत्थारं

१	१
१	२

पुणो बज्झमाण-उवसंतजीव-पयडि-समयपत्थारं च ट्ठविय

१	२	१	१	२	२
१	१	१	१	१	१
१	१	१	२	१	२

पच्छा एदस्स सुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा इ

एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उवसंता च वेयणा। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उवसंता च वेयणा। बे चेव भंगा (* अ आ का प्रतिषु 'भंगो' इति पाठः।) (२)।

बध्यमान और उपशान्त इन दो के संयोगरूप प्रथम सूत्रके अर्थका कथन करते समय

पहले बध्यमान और उपशान्त इन दोके संयोगरूप सूत्रके प्रस्तार

ब०	उ०
एक	एक
एक	अनेक

को तथा बध्यमान, उपशान्त जीव, प्रकृति और समयइनके प्रस्तारको

	बध्यमान		उपशान्त			
जीव	एक	अनेक	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	अनेक	एक	अनेक

भी स्थापित करके पश्चात्, इस सूत्रके भंगोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान और उपशान्त वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान और उपशान्त वेदना है। इस प्रकार यहाँ दो ही भंग हैं (२)।

सिया बज्झमाणिया च उवसंताओ च ।।३८।।

कथंचित् बध्यमान (एक) और उपशान्त (अनेक) वेदनाएँ हैं।।३८।।

संपहि एदस्स बिदियसुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ; सिया बज्झमाणिया च उवसंताओ च वेयणाओ। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ; सिया बज्झमाणिया च उवसंताओ च वेयणाओ। एवं बे भंगा (२)। एवं बज्झमाण-उवसंताणं दुसंजोगपरूवणा कदा। संपहि उदिण्ण-उवसंताणं दुसंजोगजणिदवेयणापरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि इ

अब इस द्वितीय सूत्रके भंगोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार दो भंग हुए (२)। इस प्रकार बध्यमान और उपशान्त इन दोके संयोगकी प्ररूपणा की गयी है। अब उदीर्ण और उपशान्त इन दोके संयोगसे उत्पन्न वेदनाकी प्ररूपणा करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

सिया उदिण्णा च उवसंता च।।३९।।

कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदना है।।३९।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे ताव उदिण्ण-उवसंतएग-बहुवयण

१	१
२	२

जणिदसुत्तपत्थारं

१	१	२	२
१	२	१	२

ठविय पुणो उदिण्ण(* अ आ का प्रतिषु 'उदिण्णा' इति पाठः।)-उवसंताणं जीव-पयडि-समयएगवयणेहि जीवसमयाणं बहुवयणेहि य उप्पण्णपत्थारं च

ठवेदूण

११२२	११२२
११११	११११
१२१२	१२१२

पच्छा भंगुप्पत्तिं वत्तइस्सामो। तं जहा --एयस्स जीवस्स

एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्सेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता, सिया उदिण्णा च उवसंता च वेयणा। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणं एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया उदिण्णा च उवसंता च वेयणा। एवं बे भंगा (२) उदिण्णुवसंताणं दुसंजोगपढमसुत्तस्स।

इस सूत्रके अर्थका कथन करते समय पहले उदीर्ण और उपशान्तके एक व बहुवचनसे

उदीर्ण	उपशान्त
एक	एक
एक	अनेक

उत्पन्न सूत्रके प्रस्तारको स्थापित करके फिर

उदीर्ण	एक	एक	अनेक	अनेक
उप०	एक	अनेक	एक	अनेक

उदीर्ण व उपशान्त सम्बन्धी जीव, प्रकृति और समयके एकवचन तथा जीव व समयके बहुवचनसे

उत्पन्न प्रस्तारको भी

	उदीर्ण				उपशान्त			
जीव	एक	एक	अनेक	अनेक	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक
समय	एक	अनेक	एक	अनेक	एक	अनेक	एक	अनेक

स्थापित करके

पश्चात् भंगोंकी उत्पत्तिको कहते हैं। यथा -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् उदीर्ण, उपशान्त वेदना है। इस प्रकार उदीर्ण और उपशान्त दोके संयोगरूप प्रथम सूत्रके दो भंग हैं (२)।

सिया उदिण्णा च उवसंताओ च ।।४०।।

कथंचित् उदीर्ण (एक) और उपशान्त (अनेक) वेदनाएँ हैं।।४०।।

एदस्स बिदियसुत्तस्स भंगे वत्तइस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्सेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ; सिया उदिण्णाओ (* अ आ का प्रतिषु 'उदिण्णाओ', ता प्रतौ 'उदिण्णा (ओ)' इति पाठः।) च उवसंताओ च वेयणाओ। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ; सिया उदिण्णा च उवसंताओ च वेयणाओ। एवं बे भंगा (२) एदस्स सुत्तस्स।

इस द्वितीय सूत्रके भंगोंको कहते हैं। यथा --एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार इस सूत्रके दो भंग हैं (२)।

सिया उदिण्णाओ च उवसंता च।।४१।।

कथंचित् उदीर्ण (अनेक) और उपशान्त (एक) वेदनाएँ हैं।।४२।।

एदस्स तदियसुत्तस्स (* ता प्रतौ 'एदस्स सुत्तस्स' इति पाठः।) भंगे वत्तइस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया उदिण्णाओ च उवसंता (* ता प्रतौ 'उवसंता(ओ)' इति पाठः।) च वेयणाओ। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया उदिण्णाओ च उवसंता च वेयणाओ। एवं बे भंगा (२)।

इस तृतीय सूत्रके भंगोंको कहते हैं। यथा -- एक जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार इस सूत्रके दो भंग हैं (२)।

सिया उदिण्णाओ च उवसंताओ च ।।४२।।

कथंचित् उदीर्ण (अनेक) और उपशान्त (अनेक) वेदनाएँ हैं।।४२।।

एदस्स चउत्थसुत्तस्स भंगे वत्तइस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा (* प्रतिषु 'समयपबद्धाओ' इति पाठः।) उदिण्णाओ, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ; सिया उदिण्णाओ च उवसंताओ च वेयणाओ। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तेसिं च जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ; सिया उदिण्णाओ च उवसंताओ च वेयणाओ। एवं बे चेव भंगा (२) उदिण्ण(*प्रतिषु 'उदिण्णा' इति पाठः।)-उवसंताणं दुसंजोगचउत्थस्स। संपहि तिसंजोगजणिदवेयणावेयणविहाणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

इस चतुर्थ सूत्रके भंगोंको कहते हैं। यथा -- एक जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार उदीर्ण और उपशान्त इन दोके संयोगरूप चतुर्थ सूत्रके दो ही भंग हैं (२)। अब तीनके संयोगसे उत्पन्न वेदनावेदनाके विधानकी प्ररूपणा करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं --

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंता च।।४३।।

कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदना है।।४३।।

एदस्स तिसंजोगपढमसुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंताणमेगवयणेहि

उदिण्ण-उवसंताणं बहुवयणेहि

१	१	१
०	२	२

जणिदतिसंजोगसुत्तस्स पत्थारं

१	१	१	१
१	१	२	२
१	२	१	२

बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंताणं जीव-पयडि-समयपत्थारे च ठविय

१ २	१ १ २ २	१ १ २ २
१ १	१ १ १ १	१ १ १ १
१ १	१ २ १ २	१ २ १ २

पच्छा भंगुप्पत्तिं भणिस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्सेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंता च वेयणाओ। एयमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया (* ता प्रतौ 'अणेयाणं (पयडीणं) जीवाणमेय' इति पाठः।) पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंता च वेयणाओ। एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

तीनोंके संयोगरूप इस प्रथम सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय बध्यमान, उदीर्ण और

उपशान्त, इनके एकवचन तथा उदीर्ण और उपशान्त, इनके बहुवचन

बध्य०	उदीर्ण	उप०
एक	एक	एक
०	अनेक	अनेक

से उत्पन्न तीनोंके संयोगरूप सूत्रके प्रस्तार

बध्य०	एक	एक	एक	एक
उदीर्ण	एक	एक	अनेक	अनेक
उपशा	एक	अनेक	एक	अनेक

तथा बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त सम्बन्धी जीव प्रकृति व समयके प्रस्तारों

जीव	बध्यमान		उदीर्ण				उपशान्त			
	एक	अनेक	एक	एक	अनेक	अनेक	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	अनेक	एक	अनेक	एक	अनेक	एक	अनेक

को भी स्थापित करके पश्चात् भंगोंकी उत्पत्तिको कहते हैं। यथा -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भंग हैं (२)।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंताओ च।।४४।।

कथंचित् बध्यमान (एक), उदीर्ण (एक) और उपशान्त (अनेक) वेदनाएँ हैं।।४४।।

एदस्स तिसंजोगबिदियसुत्तस्स अत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंताओ च वेयणाओ। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा (* प्रतिषु '-- पबद्धाओ' इति पाठः।) उवसंताओ; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंताओ च वेयणाओ। एवमेदस्स बे चेव भंगा (२)।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंता च।।४५।।

कथंचित् बध्यमान (अनेक), उदीर्ण (अनेक) और उपशान्त (एक) वेदना है।।४५।।

एदस्स तदियसुत्तस्स आलावे भणिस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंता च वेयणाओ। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झ ामाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी (* ता प्रतावतोऽग्रे 'एयसमयपबद्धा उदिण्णा तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धाओ उवसंताओ सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंताओ च वेयणाओ, एवमेदस्स बे चेव भंगा २। (१)' इति पाठः।) अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तेसिं

चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंता च वेयणाओ। एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

इस तृतीय सूत्रके आलापोंको कहते हैं। वे इस प्रकार हैं -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भंग हैं (२)।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंताओ च।।४६।।

कथंचित् बध्यमान (एक), उदीर्ण (अनेक) और उपशान्त (अनेक) वेदनाएँ हैं।।४६।।

एवमेदस्स चउत्थसुत्थस्स भंगपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा (* प्रतिषु '-- पबद्धाओ' इति पाठः।) उवसंताओ; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंताओ च वेयणाओ। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंताओ च वेयणाओ। एवं तिसंजोगचउत्थसुत्तस्स बे चेव भंगा (२)। एवं बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंताणं एग-दु(-ति)संजोगेहि ववहारणयमस्सिदूण णाणावरणीयवेयणावेयणविहाणं परूविदं।

इस प्रकार चतुर्थ सूत्रके भंगोंकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और

उपशान्त वेदनाएँ हैं। इस प्रकार तीनोंके संयोगरूप चतुर्थ सूत्रके दो ही भंग हैं (२)। इस प्रकार व्यवहार नयका आश्रय करके बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त, इनके एक, दो (और तीनोंके) संयोगसे ज्ञानावरणीयकी वेदनाके विधानकी प्ररूपणा की गयी है।

एवं सत्तण्णं कम्माणं।।४७।।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके वेदनाविधानकी प्ररूपणा करनी चाहिए।।४७।।

जहा णाणावरणीयस्स ववहारणयमस्सिदूण वेयणावेयणविहाणं परूविदं तहा सेससत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं; विसेसाभावादो।

जिस प्रकार व्यवहार नयका आश्रय करके ज्ञानावरणीय कर्मकी वेदनाके विधानकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी वेदनाके विधानकी प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है।

संगहणयस्स णाणावरणीयवेयणा सिया बज्झमाणिया वेयणा।।४८।।

संग्रह नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी वेदना कथंचित् बध्यमान वेदना है।।४८।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे जीव-पयडि-समयाणमेगवयणं जीवबहुवयणं च ड्ठविय

१	१	१
२	०	०

पुणो एत्थ अक्खपरावत्तं (* ता प्रतौ 'परावत्तिं' इति पाठः।) करिय जणिदपत्थारं

च ठवेदूण

१	२
१	१
१	१

अत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा सिया बज्झमाणिया वेयणा। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा सिया बज्झमाणिया वेयणा। एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय जीव, प्रकृति और समय इनके एकवचन तथा

जीवके बहुवचन

जीव	प्रकृति	समय
एक	एक	एक
अनेक	०	०

को स्थापित करके फिर यहाँ

अक्षपरावर्तन करके उत्पन्न हुए प्रस्तार

जीव	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक
समय	एक	एक

को स्थापित करके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् बध्यमान वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् बध्यमान वेदना है। इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भंग हैं (२)।

सिया उदिण्णा वेयणा।।४९।।

कथंचित् उदीर्ण वेदना है।।४९।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे जीव-पयडि-समयाणमेगवयणेहि जीवबहुवयणेण च

१११	
२००	

उप्पाइदपत्थारो ठवेदव्वो

१	२
१	१
१	१

(* प्रतिषु एवंविधोऽत्र प्रस्तारो लभ्यते।

एसो संगहणओ तिण्णि वि काले कालसामण्णेण संगहिदूण गेण्हदि त्ति कालस्स बहुवयणं णेच्छदि। जीवेसु वि जीवसामण्णेण संगहिदेसु (* अ आ का प्रतिषु 'संगहिदेस' इति पाठः।) बहुत्तं णत्थि त्ति जीवबहुवयणं किण्णावणिज्जदे? ण (* ता प्रतौ 'ण' इत्येतस्य स्थाने 'एवं' इत्येतत्पदमुपलभ्यते।), संगहणयस्स सुद्धस्स विसए अप्पिदे जीवबहुत्ताभावादो होदि चेव, किंतु असुद्धसंगहणओ अप्पिदो त्ति कट्टु ण जीवाणहुत्तं विरुज्झदे। संपहि एवं ठविय एदस्स अत्थपरूवणं कस्सामो। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उदिण्णा वेयणा। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उदिण्णा वेयणा। एवं बे भंगा (२) उदिण्णेगवयणसुत्तस्स।

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय जीव, प्रकृति और समय, इनके एकवचन और

जीवके बहुवचन

जीव	प्रकृति	समय
एक	एक	एक
अनेक	०	०

से उत्पन्न कराये गये प्रस्तारको स्थापित करना चाहिए --

जीव	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक
समय	एक	एक

चूँकि यह संग्रह नय तीनों ही कालोंको कालसामान्यसे संगृहीत करके ग्रहण करता है, अतएव वह कालके बहुवचनको स्वीकार नहीं करता।

शंका -- जीव सामान्यसे जीवोंके भी संगृहीत होनेपर चूँकि उनका भी बहुवचन सम्भव नहीं है, अतएव जीवोंके बहुवचनको कम क्यों नहीं किया जाता है?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, यद्यपि शुद्ध संग्रहनयके विषयकी प्रधानता होनेपर जीवबहुत्वका अभाव होता ही है, किन्तु यहाँ चूँकि अशुद्ध संग्रह नय प्रधान है, अतः जीवबहुत्व विरुद्ध नहीं है

अब इस प्रकारसे (प्रस्तारको) स्थापित करके इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है-- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् उदीर्ण वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् उदीर्ण वेदना है। इस प्रकार उदीर्ण वेदना सम्बन्धी एकवचन सूत्रके दो भंग हैं (२)।

सिया उवसंता वेयणा।।५०।।

कथंचित् उपशान्त वेदना है।।५०।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे जीव-पयडि-समयाणमेगवयणेहि जीवबहुवयणेण च

१११
२००

जणिदपत्थारं

१	२
१	१
१	१

ठविय एदस्स सुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो।

तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उवसंता वेयणा। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेगाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उवसंता वेयणा। एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय जीव, प्रकृति व समय, इनके एकवचन तथा जीवके

बहुवचन

जीव	प्रकृति	समय
एक	एक	एक
अनेक	०	०

से उत्पन्न हुए प्रस्तार

जीव	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक
समय	एक	एक

को स्थापित करके

इस सूत्रके भंगोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् उपशान्त वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी कथंचित् उपशान्त वेदना है। इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भंग हैं (२)।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च।।५१।।

कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदना है।।५१।।

एदस्स दुसंजोगपढमसुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे बज्झमाण-उदिण्णाणं

१
१

दुसंजोगपत्थारं (* आ का प्रत्योः , ता प्रतौ एवंविधोऽत्र प्रस्तारः।) तेसिं चेव जीव-पयडि-समयपत्थारं च ठविय

१ २	१ २
१ १	१ १
१ १	१ १

पच्छा परूवणा कीरदे। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च वेयणा। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च वेयणा। एवमेदस्स सुत्तस्स दो चेव भंगा होंति (२)।

दोके संयोगरूप इस प्रथम सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय बध्यमान व उदीर्ण इन दोके संयोगसे उत्पन्न प्रस्तार

बध्य०	एक
उदीर्ण	एक

को तथा उनसे ही सम्बन्ध रखनेवाले जीव, प्रकृति और समय, इनके प्रस्तार

	बध्यमान		उदीर्ण	
जीव	एक	अनेक	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	एक

को भी स्थापित करके पश्चात् यह प्ररूपणा की जाती है। यथा -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण; कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण; कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदना है। इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भंग होते हैं (२।)

सिया बज्झमाणिया च उवसंता च।।५२।।

कथंचित् बध्यमान और उपशान्त वेदना है।।५२।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे बज्झमाण-उवसंताणं दुसंजोगपत्थारं

१
१

तेसिं चेव (जीव-)पयडि-पत्थारं च ठविय

१२	१२
११	११
११	११

पच्छा सुत्तालावो वुच्चदे। तं जहा --एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उवसंता च वेयणा। एवमेगा उच्चारणा (१)। अधवा अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उवसंता च वेयणा। एवमेदस्स सुत्तस्स दो चेव उच्चारणाओ (२)।

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय बध्यमान और उपशान्त इन दोके संयोगरूप प्रस्तार

बध्य०	१
उदीर्ण	१

को तथा उन्हींसे सम्बन्ध रखनेवाले जीव, प्रकृति व समय इनके प्रस्तारको भी स्थापित

	बध्यमान		उपशान्त	
जीव	एक	अनेक	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	एक

करके पश्चात् सूत्रके आलापको कहते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान और उपशान्त वेदना है। इस प्रकार एक उच्चारणा हुई (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान और उपशान्त वेदना है। इस प्रकार इस सूत्रकी दो ही उच्चारणाएँ हैं (२)।

सिया उदिण्णा च उवसंता च।।५३।।

कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदना है।।५३।।

१
१

एत्थ वि पुव्वं व उदिण्णुवसंतदुसंजोगपत्थारं तेसिं चेव जीव-पयडि-समयपत्थारं च ठविय

१ २	१ २
१ १	१ १
१ १	१ १

अत्थो वुच्चदे। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया उदिण्णा च उवसंता च वेयणा। एवमेया उच्चारणा (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया उदिण्णा च उवसंता च वेयणा। एवमेत्थ बे चेव उच्चारणाओ (२)। संपहि तिसंजोगजणिदवेयणाविहाणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि --

यहाँ भी पहलेके समान उदीर्ण और उपशान्त, इन दोके संयोगरूप प्रस्तार

बध्य०	१
उप	१

को तथा उन्हींसे सम्बन्ध रखनेवाले जीव, प्रकृति और समय, इनके प्रस्तार

	बध्यमान		उपशान्त	
जीव	एक	अनेक	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	एक

को भी स्थापित करके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदना है। इस प्रकार एक उच्चारणा हुई (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदना है। इस प्रकार यहाँ दो ही उच्चारणाएँ हैं (२)। अब तीनोंके संयोगसे उत्पन्न वेदनाके विधानकी प्ररूपणा करनेके लिए आगेका सूत्र कहते हैं।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंता च।।५४।।

कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदना है।।५४।।

एदस्स अत्थे भण्णमाणे तिसंजोगसुत्तपत्थारं

१
१
१

तेसिं चेव (जीव-)पयडि-समयपत्थारे च ठविय

१२	१२	१२
११	११	११
११	११	११

अत्थो वुच्चदे। तं जहा -- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंता च वेयणा। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंता च वेयणा। एवं बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंताणं तिसंजोगम्मि दो चेव भंगा (२)।

ब०	१
उ०	१
उप०	१

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय तीनोंके संयोगरूप सूत्रके प्रस्तार

को तथा उन्हींसे सम्बद्ध (जीव), प्रकृति और समयके प्रस्तार

जीव	बध्यमान		उदीर्ण		उपशान्त	
	एक	अनेक	एक	अनेक	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	एक	एक	एक

को भी स्थापित करके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं। वह इस प्रकार है -- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदना है। इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गयी उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदना है। इस प्रकार बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त इन तीनोंके संयोगमें दो ही भंग होते हैं(२)।

एवं सत्तण्णं कम्माणं।।५५।।

इस प्रकार शेष सात कर्मोंके सम्बन्धमें कथन करना चाहिए।।५५।।

जहा संगहणयमस्सिदूण णाणावरणीयवेयणावेयणविहाणं परूविदं तहा सेससत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं, विसेसाभावादो।

जिस प्रकार संग्रह नयका आश्रय करके ज्ञानावरणीय कर्मके वेदनावेदनाविधानकी प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके वेदनावेदनाविधानकी भी प्ररूपणा करनी चाहिए, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है।

उजुसुदस्स णाणावरणीयवेयणा उदिण्ण (* प्रतिषु 'उदिण्णा-' इति पाठः।) फलपत्तविवागा वेयणा।।५६।।

ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय कर्मकी वेदना उदीर्ण फलको प्राप्त विपाकवाली वेदना है।।५६।।

उदीर्णस्य फलं उदीर्णफलं, तत्प्राप्तौ विपाको यस्यां सा उदीर्णविपाकफलप्राप्तविपाका वेदना भवति, नापरा (* ता प्रतौ '-- प्राप्तविपाकवेदना परा' इति पाठः।)। जो कम्मक्खंधो जम्हि समए अण्णाणमुप्पाएदि सो तम्हि चेव समए णाणावरणीयवेयणा होदि, ण उत्तरखणे, विणट्ठकम्मपज्जायत्तादो। ण पुव्वक्खणे वि, तस्स अण्णाणजणणसत्तीए अभावादो। ण च वेयणाए अकारणं वेयणा होदि, अव्ववत्थापसंगादो। तम्हा बज्झमाण-उवसंतकम्माणि वेयणा ण होंति, उदिण्णं चेव वेयणा होदि त्ति भणिदं होदि।

उदीर्णका फल उदीर्णफल, उसको प्राप्त है विपाक जिसमें वह उदीर्णफलविपाक वेदना है, इतर नहीं है। अर्थात् जो कर्मस्कन्ध जिस समयमें अज्ञानको उत्पन्न कराता है उसी समयमें ही वह ज्ञानावरणीयकी वेदना होता है, न कि उत्तर क्षणमें, क्योंकि, उत्तर क्षणमें उसकी कर्मरूप पर्याय नष्ट हो जाती है। पूर्व क्षणमें भी उक्त कर्मस्कन्ध ज्ञानावरणीयकी वेदनारूप नहीं होता, क्योंकि, उस समय उसमें अज्ञानको उत्पन्न करानेकी शक्तिका अभाव है। और जो वेदनाका कारण ही नहीं है वह वेदना नहीं होता है, क्योंकि, वैसा होनेपर अव्यवस्थाका प्रसंग आता है। इस कारण बध्यमान व उपशान्त कर्म वेदना नहीं होते, किन्तु उदीर्ण कर्म ही वेदना होता है; यह सूत्रका अभिप्राय है।

एवं सत्तण्णं कम्माणं।।५७।।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिए।।५७।।

जहा णाणावरणीयस्स परूविदं तहा सेससत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं।

जिस प्रकार ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षासे ज्ञानावरणीयके सम्बन्धमें प्ररूपणा की गयी है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके सम्बन्धमें भी प्ररूपणा करनी चाहिए।

सद्दणयस्स अवत्तव्वं।।५८।।

शब्द नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी वेदना अवक्तव्य है ।।५८।।

कुदो? तस्स विसए दव्वाभावादो। णाणावरणीय-वेयाणासद्दाणं भिण्णत्थाणं भिण्णसरूवाणं समासाभावादो वा पुधभूदेसु च तस्सेदमिदि संबंधाभावादो वा तिण्णं सद्दणयाणमवत्तव्वं।

इसका कारण यह है कि शब्द नयके विषयमें द्रव्यका अभाव है। अथवा, ज्ञानावरणीय और वेदना इन भिन्न अर्थ व स्वरूपवाले दोनों शब्दोंका समास न हो सकनेसे, अथवा पृथग्भूत

और अपृथग्भूत उनमें 'यह उसका है' इस प्रकारका सम्बन्ध न बन सकनेसे भी तीनों शब्द नयोंकी अपेक्षासे वह अवक्तव्य है।

एवं वेयणावेयणाविहाणे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं।

इस प्रकार वेदनावेदनाविधान यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ।